शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी अ० द्वि० – पत्र

निबंधमाला – गद्य भाग

शीर्षक:- दिल्ली, दिनकर और कुम्हार का चाक

लेखक :- प्रमोदजी

प्रश्न:- दिल्ली, दिनकर और कुम्हार का चाक शीर्षक निबंध के आधार पर दिनकर जी का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर:- डॉ० प्रमोद कुमार सिंह एक उच्चकोटि के चिन्तक, सुधि-समीक्षक एवं विद्वान कवि हैं। इनके निबंधों में अध्ययन की गहराई के साथ-साथ व्यंग्य की चतुराई तथा वचन वक्रता की लुनाई भी छिपी रहती है।

'दिल्ली, दिनकर और कुम्हार का चाक' इनका एक शोध परक व्यंग्यात्मक निबंध है, जिसमें इन्होंने दिनकर जी का वंश परिचय देते हुए मायाविनी दिल्ली की बेवफाई का वर्णन किया है।

चिरायु मिश्र कहते हैं कि मिथिला के चक्रवर्ती महाराज थे जब इनका तेज मिथिला की मुलायम मिट्टी में इनका प्रभाव समाप्त हो गया तो इन्होंने बागी होकर उत्तरी अंग भूमि की ओर रुख किया। इसके साथ एक आखेटक श्वान भी था। संगिनी के साथ चलता हुआ यह नर पुरुष जब अंग की सीमा में घुसा तो प्रवेश करते ही इसके शिकारी कुत्ते को यहाँ के अल्प प्राण-जीव 'खरीखर' ने मार डाला। महाराज को इस धरती के पुरुषार्थ का परिचय मिल गया और इन्होंने यहीं गंगा के आर-पार रहने का निश्चय किया और अपने चाक की स्थापना की। इनके वंशज चकवार कहलाये, जिनकी परम्परा में आगे चलकर दिनकर जी का जन्म हुआ।

इतिहास साक्षी है कि अंग देश एवं राजधानी दिल्ली में कभी नहीं पटी। जब-जब दिल्ली पहुँचा तब-तब वहाँ हड़कंप मचती रही। वह समय चाहे अंग राज कर्ण का हो या अथवा आधुनिक कवि दिनकर का। चकवारों से अंग्रेजों की कभी नहीं बनी। शेष आगे के कक्षा में-

डॉ० देव चरण प्रसाद 23/06/21
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० अ० सं० महाविद्यालय, पूर्णियाँ

उपध्यायी, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०हि० – पत्र

दिगंत-भाग-2 पद्य भाग
शीर्षक :- "तुमुल कोलाहल कलह में"
कवि :- जयशंकर प्रसाद

व्याख्या :-

जहाँ मरु ज्वाला धधकती,
चातकी कन को तरसती;
उन्हीं जीवन घाटियों की,
मैं सरस बरसात रे मन।

प्रस्तुत व्याख्येय पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक दिगंत-भाग-2 के 'तुमुल कोलाहल कलह में' शीर्षक से उद्धृत हैं। इसके कवि छायावाद के प्रवर्तक जयशंकर प्रसाद जी हैं।

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि जहाँ मरुभूमि की ज्वाला धधकती है और चातकी जल के कण को तरसती है, उन्हीं जीवन की आशा में मैं सरस बरसात बन जाती हूँ। कवि के कहने का भाव यह है कि जिन लोगों का जीवन मरुस्थल की सूखी घाटी के समान दुर्गम, विषम और ज्वालामय हो गया है, जहाँ चित्त चातकी को एक कण भी सुख का जल नहीं मिला हो उन्हें आशा की एक किरण मात्र मिल जाने से जीवन में रस की वर्षा होने लगती है।

प्रश्न :- बरसात को 'सरस' कहने का क्या अभिप्राय है?

उत्तर :- बरसात जलों का राजा होता है। बरसात में चारों तरफ जल ही जल दिखाई देता है। पेड़-पौधे हरे-भरे हो जाते हैं। लोग बरसात में आनन्द एवं सुख का अनुभव करते हैं। उनका जीवन सरस हो जाता है अर्थात् जीवन में खुशियाँ आ जाती हैं। खेतों में फसल लहराने लगती हैं। किसानों के लिए यह समय तो और भी खुशियाँ लाने वाला होता है। इसलिए कवि जयशंकर प्रसाद ने बरसात को सरस कहा है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० ऊ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
03/06/21

जयद्रथ-वध

कवि - मैथिलीशरण गुप्त

भावार्थ

"नर-देव-सम्भव वीर वह रण-मध्य जाने के लिए,
बोला वचन निज सारथी से रथ सजाने के लिए।
यह विकट साहस देख उसका, सूत विस्मित हो गया,
कहने लगा इस भाँति फिर वह देख उसका वय नया।"

भावार्थ:- प्रस्तुत पद के माध्यम से कवि वीर अभिमन्यु के युद्ध भूमि में जाने के लिए तैयार हो जाने का वर्णन करते हुए कहता है कि बालक वीर अभिमन्यु अपने सारथी से तैयार होने को कहता है। सारथी उसे समझाने का प्रयास करता है।

वीर अभिमन्यु मनुष्य रूपी देवता से उत्पन्न था। ऐसा वीर जब युद्धभूमि में जाने के लिए बिल्कुल तैयार हो गया तब उसने अपने सारथी से रथ सजाने का आदेश दिया। रथ को हाँकने वाला अभिमन्यु के इस विकट साहस को देखकर आश्चर्य चकित रह गया। उसके यौवन में इस अद्भुत साहस और उत्साह को देख कर कुछ कहना चाहता है।

प्रस्तुत पद में नर-देव-सम्भव कह कर कवि ने इस तथ्य की ओर इंगित किया है कि कुंती ने इन्द्र देवता का स्वयं आह्वान किया था जिसके फलस्वरूप जैसे पुत्र रत्न की उत्पति हुई। इस रूप में अर्जुन की शिराओं में मानवी और दैवी दोनों ही प्रकार के रक्त का सम्मिश्रण था जो अभिमन्यु को भी पिता से विरासत में मिला था। इसीलिए उसका साहस और उत्साह देखते ही बनता था।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
राउ० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ

03/06/21